बुद्धी पूर्णता

लेखकः

सैय्यद मुर्तज़ा मुजतहेदी सीसतानी

अनुवादकः

ज़ैन अलवी जौनपूरी

WWW.ALMONJI.COM

Email: info@almonji.com

किताब का नामः बुद्धी पूर्णता
लेखकः सैय्यद मुर्तज़ा मुजतहेदी सीसतानी
अनुवादकः ज़ैन अलवी जौनपूरी
नज़रे सानीः फ़िज़्ज़ा सिद्दीक़ा अज़हरी
कम्पोज़िंगः ज़ाहेदा अज़हरी

बुद्धी पूर्णता

इंसान की उत्पत्ति बहूत आश्चर्यजनक और महत्वपूर्ण है। यानी अगर इंसान खुद अपने आप को पहचान ले तो बहूत से असम्भव कामों को भी कर सकता है। लेकिन अगर वह अपने अंदर छिपी हुई शक्तियों को ना पहचान सके तो फिर उसने अपनी शक्तियों को बरबाद कर दिया।

हज़रत अली इब्ने अबी तालिब अलैहेमस्सलाम ने बारहा इसांनो को इस सत्य के बारे में आगाह किया है और फ़रमाया कि तुम यह मत सोचना कि तुम एक छोटी सी कोई वस्तु हो बल्कि यह जान लो कि तुम्हारे अंदर रहस्य का एक संसार छुपा हुआ है।

मगर अफ़सोस की बात यह है कि समाज में कोई भी उस महान हस्ती को ना समझ सका और ना पहचान सका। और लोगों ने इस बारे में हज़रत अली अलैहिस्सलाम से कोई प्रश्न नहीं पूछा और जब मौला ने कहा कि मैं ज़मीन से ज़्यादा आसमान के रास्तों को

जानता हूँ। मुझ से पूछो मैं तुमको उसका जवाब दूँगा, तो उसनी बड़ी भीड़ से एक आदमी ने सिर्फ़ यह प्रश्न किया कि मौला मेरे सर पर बाल कितने हैं ?

तारीख़ में यह बात नहीं लिखी है कि वहाँ कितने लोग थे, कि जो इस बेवक़ूफ़ी भरे प्रश्न पर उस को बुरा भला कहते।

हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने इंसानों के दिमाग़ की आश्चर्यजनक शक्तियों के बारे में आगाह किया है, और उन्हें ऐसी छिपी हुई शक्तियों के बारे में बताया कि जिसका प्रयोग करके इंसान प्रगति को पहुँच सकता है। मगर मौला के कुछ साथियों के अलावा कोई भी दिमाग़ की छिपी हुई शक्तियों को ना पहचान सका।

उस दिन से लेकर आज तक सदियाँ गुज़र गई, लेकिन अभी तक बहुत से लोगों को दिमाग़ की शक्तियों के बारे में जानकारी नही हो सकी और जिनको जानकारी हुई वह भी अभी तक दिमाग़ की बहुत सी शक्तियों को नही जान सके हैं ।

इंसान के अंदर परिवर्तन आवश्यक है

इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ अपने राज्य के दौरान दुनिया और दुनिया वालों को आरामदेह जीवन देने के लिए अपनी ग़ैर मामूली शक्ति और अपनी वेलायत की शक्ति से फ़ायदा उठायेंगे, दुनिया में परिवर्तन और दुनिया वालों में बुद्धी पूर्णता पैदा करेंगे।

इंसान किस तरह से अपनी ख़िलक़त (पैदाइश) के रहस्य को और वेलायत के महान रहस्य को समझ सकता है जबकि उसके दिमाग़ की शक्तियाँ अभी तक उजागर नहीं हो सकी हैं। और अब भी सोच विचार के सागर में डूबा हुआ है।

इसी कारण इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहु१शरीफ लोगों को ख़ुदा का संदेश और मआरिफ़ देने से पहले इंसान के अंदर परिवर्तन लाएँगे और उसकी बुद्धी को उन्नति अता करेंगे।

उस समय की प्रगति और दीन को समझने के लिए इसांन के अंदर यह परिवर्तन अवश्यक है और इसके बिना इंसान इल्म और दीन की गुत्थियों को समझ ही नहीं सकता।

अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम के महान मआरिफ़ को समझने और इंसान की शक्तियों और युग्यताओ को बढ़ाने के लिए यह परिवर्तन बहुत ही आवश्यक है अतः उनके अंदर यह परिवर्तन होना ही चाहिए और जब दुनिया वालों में परिवर्तन होगा तो दुनिया में भी अवश्य होगा।

जिस तरह काम और नौकरी के लिए एक बच्चे का बड़ा होना ज़रूरी है उसी तरह इस संसार के रहस्य को समझने के लिए उसमें परिवर्तन ज़रूरी है।

क्या बचपन में इंसान इस संसार के रहस्य को समझ सकता था जब कि उस को रास्ते और कुँए में भी कोई फ़र्क़ नहीं लगता था ?

बचपन में इंसान को अपनी उंगली के बारे में भी पता नहीं था वह इंसान अंतरिक्ष के रहस्य को कैसे समझ सकता है ?

यह बात बिल्कुल साफ़ है कि इन रहस्यों को समझने के लिए उसकी अक़ल में प्रगति का होना ज़रूरी है ताकि उन रहस्यों को समझ सके और फिर उसको इन रहस्यों का ज्ञान दिया जाए।

इसीलिए इंसानों को ऐसे रहस्यों को समझने के लिए उनके दिमाग़ के सेल्स का काम करना बहुत ज़रूरी है ताकि इंसान में बुद्धी पूर्ण हो और वह इन रहस्यों को समझने की योग्यता पैदा कर सके।

इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ और बुद्धी पूर्णता (अक़ली तकामुल)

कौन इंसान के वजूद में परिवर्तन कर सकता है ?

किस में यह शक्ति है कि वह इंसान के अंदर और उसके दिमाग़ में छिपी हुई शक्तियों को उजागर करे तकि सब के सब ख़ुदा के हुक्म का पालन करें और तमाम अख़लाक़ी फ़जीलतों को हासिल करलें ?

क्या इस दुनिया की इस्लाह करने वाले मुस्लेह के अलावा यह काम कोई और कर सकता है ?

इस सिलसिले में इमाम-ए-मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम की रेवायत में दुनिया की प्रगति के रहस्य से परदा उठाया गया है और फ़रमाया है कि यह उन्नति

और प्रगति इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ के माध्यस से होगी और आप ने फ़रमाया :

اذا قام قائمنا وضع یدہ علی رؤوس العباد، فجمع بہ عقولھم واکمل بہ احلامھم

जब हमारा क़ायम (यानी इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ)ज़हूर करेंगे तो वह तमाम लोगों के सरों पर अपना हाथ रखेंगे इस प्रकार से इंसानों की बुद्धी पूर्ण हो जाएगी और उसके अख़लाक भी पूर्ण हो जाएँगे।(१)

इस रेवायत में कुछ पवित्र नोकात (पोवाइंटस) मौजूद हैं क्योंकि यह बिल्कुल साफ है कि कोई भी खानदाने अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम के फ़रामीन (फ़रमान की जमा) से मोकम्मल तौर से आगाह नहीं हो सकता।

हज़रत इमाम-ए-जाफ़रे सादिक़ अलेहिस्सलाम से ज़ैदे ज़र्राद ने एक रेवायत बयान की है कि जिसमें मआरिफ़े अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम के महत्वपूर्ण नोकात की तरफ़ ईशारा है।

قلّت لابی عبداللہ : نخشی اَن لانکون مومنین۔

قال : ولم ذاک ؟فقلت وذلک انا لانجد فینا من یکون اخوہ عندہ آثر من درھمہ ودیناره، ونجد الدینار والدرھم آثر عندنا من اخ قد جمع بیننا وبینہ موالاۃ امیر المومنین علیہ السلام

قال کلا انکم مؤمنون، ولکن لاتکلمون ایمانکم حتی یخرج قائمنا، فعندنا یجمع اللہ احلامکم، فتکونون مومنین کاملین ولولم یکن فی الارض مؤمنون کاملون، اذاًگر فعنا اللہ الیہ وأنکرتم الأرض وأنکرتم السماء.....

मैंने हज़रत इमाम-ए-जाफ़रे सादिक़ अलेहिस्सलाम से पूछा:

हम डरते हैं कि कहीं ऐसा तो नहीं कि हम मोमिन नहीं हैं ?

हज़रत इमाम-ए-जाफ़रे सादिक़ अलेहिस्सलाम ने पूछा किस लिए डरते हो ?

मैंने कहाः क्योंकि हम में ऐसा कोई नहीं है जिसके नाज़दीक उसका भाई रुपयों और पैसों से ज़्यादा प्यारा हो, हम रुपयों और पैसों को अपने भाईयों से ज़्यादा प्यार करते हैं, ऐसा भाई की जो हज़रत अली अलैहिस्सलाम से मोहब्बत करने वाला है ।

हज़रत इमाम-ए-जाफ़रे सादिक़ अलेहिस्सलाम ने फ़रमायाः तुम लोग अवश्य मोमिन हो, लेकिन तुम लोग अपने ईमान को पूर्ण नहीं करते कि जब हमारा क़ायम ज़हूर करेगा तो उस समय ईश्वर तुम्हारी बुद्धी को पूर्ण करेगा। अतः मोमिन पूर्ण हो जाएँगे, और अगर धरती पर कामिल मोमिन नहीं हुए तो ईश्वर हमें तुम्हारे बीच से उठा लेगा और तुम ज़मीन व आसमान का इन्कार कर दोगे।(२)

इस रेवायत से बहुत से नोकात (पोवइंटस) प्राप्त होते हैं।

१. जब तक इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ का ज़हूर नही होगा उस समय तक मोमिनों का ईमान मोकम्मल नहीं होगा।

२. हम अपने धार्मिक भाईयों से ज़्यादा रूपयों और पैसों से प्यार करते हैं।

३. इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ के समय में बुद्धियाँ पूर्ण हो जाँएगी।

४. बुद्धियों के पूर्ण होने का अर्थ यह है कि ईमान भी कामिल हो जाएगा।

५. ज़हूर से पहले कामिल ईमान वाले लोग बहुत कम होंगे।

६. अगर अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम धरती पर ना हों तो लोगों में इतना भी ईमान ना रहता (जितना कि लोगों में आज है।)

७. धरती पर इंसानों का वजूद अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम के कारण है।

८. इस रेवायत से एक दूसारा नुक्ता भी प्राप्त होता है कि ज़हूर के पवित्र ज़माने में बुद्धियों के पूर्ण होने के कारण लोगों में सहृदयता (ख़ुलूस) जन्म लेगी और वह लोग ईमान को रुपयों और पैसों पर प्राथमिकता देंगे, और एक दूसरे से ऐसा व्यवहार करेंगे कि जैसे वह माल व दौलत में उनके सहयोगी हैं।

एकता से भरी हुई, दुनिया

स्वर्गीय अल्लामा मजलिसी "किताबे बेहारुल अनवार " में रेवायत बयान करते हैं कि इमाम-ए-मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से पूछा गया:

ان اصحابنا بالکوفۃ جماعۃ کثیرۃ فلو امرتھم لاطاعوک واتبعوک

فقال: یجیئ احدھم الی کیس اخیہ فیاخذ منہ حاجتہ ؟

فقال: لا

قال: فھم بدمائھم ابخل

فقال: ان الناس فی ھدنتنا کھم ونوارثھم ونقیم علیھم الحدود ونؤدی امانا تھم حتی اذا قام القائم جاءت المزاملۃ ویاتی الرجل الی کیس اخیہ فیاخذ حاجتہ لایمنعہ

कूफ़े में हमारे साथी बहुत हैं, अगर उन्हें हुक्म करें तो वह आपकी आज्ञा का पालन करेंगे और आपके आज्ञाकारी होंगे।

इमाम-ए-मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः क्या उनमें कोई भी अपने भाई की जेब से आवश्यकतानुसार लेता है ?

मैंने कहा नहीं।

इमाम-ए-मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कहा, जब वह अपने माल के प्रति इतने कंजूस हैं तो वह अपनों के प्रति उससे भी ज़्यादा कंजूस होंगे।

फिर इमाम-ए-मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कहा, अब लोगों में मेल मिलाप और सुख व शान्ति है। (यानी जब ज़हूर हो जाएगा उस समय।)

उनसे विवाह करेंगे, मीरास लेंगे, उनको धार्मिक सज़ा देंगे और उनकी अमानतें उनको लौटा देंगे, ताकि जब इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ ज़हूर करें तो उस समय लोगों में सच्चा प्यार पैदा हो जाए और लोग अपने भाईयों की जेब से आवश्यकतानुसार माल लेलें और वह उनको मना भी ना करें।(३)

बुद्धी की पूर्णता (अक़ली तकामुल) से समाज में सहृदता व प्रेम का ऐसा वातावरण बन जाएगा कि सब प्रेम, और एकता, का प्रयास करेंगे ।

उस ज़माने में आपसी जीवन में प्यार और मोहब्बत होगी इस तरह कि सब अपने माल में दूसरों को, और दूसरों के माल में अपने आप को शरीक (हिस्सेदार) समझ कर उससे लाभ उठायेंगे औह यह सब इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ के न्यायिक राज्य और ख़ुदा की हुकुमत के कारण होगा। फिर इंसान अक़ले

कामिल से लाभ उठाते हुए प्यार,मोहब्बत,भाई-चारे की दुनिया की तरफ विचरित हो जाएगा ।

अब हम जो रेवायत बयान करने जा रहे हैं उस पर ध्यान देः

इमाम-ए-मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने सईद इबने हसन से फ़रमायाः

أيجيئ احدكم الى اخيه فيدخل يده فى كيسه، فياخذ حاجته فلا يدفعه ؟

فقلت: ما أعرف ذلك فينا۔

فقال ابو جعفر عليه السلام فلا شئ اذاً۔

فلت: فالهلاك اذاً

فقال: ان القوم لم يعطوا احلامهم بعد

इमाम-ए-मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः

क्या उनमें से कोई ऐसा हैं जो अपने भाई की जेब से आवश्यकतानुसार लेले और माल का मालिक भी उसको मना ना करे ?

मैंने उत्तर दियाः हमने अपनों में ऐसा नहीं देखा।

इमाम-ए-मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः फिर तो कुछ भी नही है!!

मैंने कहाः फिर क्या हम लोग हलाक और गुमराह हो जाएँगे।

इमाम-ए-मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने इस शंका (एहतेमाल) को नकारते हुए फ़रमायाः

अभी तक लागों को उनकी बुद्धी नहीं दी गयी है।(४)

इस रेवायत के आधार पर जब तक समाज ऐसी महान विशेषता का मालिक ना बन जाए तब तक वह पूर्ण बुद्धी से लाभ नहीं उठा सकता।

इमाम-ए-मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम के बयान करने के अनुसार अभी तक उन को बुद्धियाँ नहीं दी गई हैं।

यानी समाज के लिए अक़्ल की पूरी शक्तियोँ से लाभ उठाना असम्भव है। जिस तरह लोग सोने के ख़ज़ानों को मट्टी में छिपा देते हैं इसी तरह लोगों ने अपनी सोच-विचार की शक्तियोँ को भी ज़मीन के नीचे दफ़न कर दिया है ।

लेकिन उस समय इंसान की अकलें पूरी हो जाएँगी जिसके नतीजे में ना सिर्फ़ कंजूसी बल्कि सारी बुरी आदतें भी खत्म हो जाएँगी। बुरी आदतें खत्म हो जाएँगी।

ज़हूर के ज़माने में, बुरी आदतों पर विजय

अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम के ख़ास साथियों ने ऐसे आमाल अन्जाम दिए जिनके कारण वह बुरी आदतों पर विजयी हुए और उन्होंने अपनी बुद्धी की शक्तियों से लाभ उठाते हुए कमाल को प्राप्त किया।

यह बिल्कुल साफ सी बात है कि जब अक़्ल कामिल हो जाए तो ना सिर्फ़ यह कि इंसान बुरे आमाल पर बल्कि बुरी आदतों पर भी विजय प्राप्त कर लेता है ।

जैसा कि हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः

والعقل الكامل قاهر الطبع السوء

कामिल अक़ल (पूर्ण बुद्धी) बुरी आदतों पर विजय प्राप्त कर लेती है।(५)

इस वजह से कामिल अक़ल सारी बुरी आदतों पर विजय प्राप्त कर लेती है यहाँ तक कि उन आदतों पर भी कि जो उसकी ज़ात का हिस्सा बन चुकी हों। फिर वह उन्हीं अक़ली शक्तियों की सहायता से उसपर विजय प्राप्त करता है।

हज़रत अली अलैहिस्सलाम से यह नोक्ता प्राप्त होता है कि ख़ुदा के ख़ास बन्दों और बुद्धिमानों में बुरी आदतों का पाया जाना असंभव है।

यह ऐसे लोगों के लिए आकाशवाणी है कि जिनके अंदर बुरी आदतें पायी जाती हैं वे निराश ना हों बल्कि ख़ुद को दुआ और प्रयास के माध्यम से कमाल तक पहुँचाऐ।
यहाँ तक कि हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने इसी रेवायत में कमाल चाहने वालों के लिए रास्ता बताया हैः

وعلی العاقل ان یحصی علی نفسہ مساویھا فی الدین والرای والاَخلاق والاَدب فیجمع ذلک فی صدرہ اَو فی کتاب ویعمل فی ازالتھا

बुद्धिमान का कर्तव्य यह है कि वह अपने नफ़्स की सारी बुराईयों को अपने धर्म, और अख़लाक़ में शुमार करे और उनको अपने मस्तिष्क में जमा करे और फिर उनको ख़त्म करनें का प्रयास करे।(६)

हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने बुद्धिमानों को हुक्म दिया है कि वह बुराईयों को याद करके उनको ख़त्म करने का प्रयास करें और यह एक ऐसा बेहतरीन क़ानून है कि अगर इसके अनुसार अमल करें तो यह आपको आला दर्जे तक पहुँचा देगा।

क्योंकि इस कार्य से आपके तजरुबे में बढ़त होगी और जिसका तजरुबा ज़्यादा होता है उसकी अक़्ल भी ज़्यादा होती है और वह १०० वर्ष के रास्ते को भी, बहुत जल्दी तै कर लेता है।

तजरूबे के कारण बुद्धी का बढ़ना, यह एक ऐसा नुक्ता है कि जिसकि तरफ़ हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने इसी रेवायत के शुरु में ही फ़रमा दिया थाः

العقل عقلان؛ عقل الطبع و عقل التجربة، و كلاهما يؤدّي الى المنفعة

बुद्धी (अक़्ल) दो प्रकार की होती हैः अक़्ले तबीयी (वह अक़्ल जो उसके पास होती है) और अक़्ले तजरुबी (वह अक़्ल जो दुनिया में रहके दुनियावी उतार चढ़ाव के कारम उसको प्राप्त होती है।) । और दोनों ही इंसान के लिए लाभदायक है।(७)

इस वजह से इंसान के अंदर अक़्ले ज़ाती और फ़ितरी अक़्ल के अलावा अक़्ले तजरुबी भी पायी जाती है। जैसा कि हज़रत अली अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि दोनों ही बुद्धियाँ इंसान को लाभ पहुँचाती हैं।

इन तमाम बातों से कुछ नोकात प्राप्त होते हैः

१. बुद्धी दो तरह की होती हैः ज़ाती और तजरुबी।

२. जिस तरह इंसान की ज़ाती बुद्धी उस को लाभ पहुँचाती है उसी तरह अक़्ले तजरुबी भी इंसान को लाभ पहुँचाती है।

३. बुद्धिमान पर वाजिब है कि वह अपनी दीनी और अख़लाक़ी बुराईयों को पहचाने और उन को ख़त्म करने का प्रयास करे।

४. अतीत की ग़ल्तियों के कारण निराश नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे हज़रत अली अलैहिस्सलाम के फ़रमान के अनुसार उसे अमल करना चाहिए और उससे ईब्रत (कुछ सीखना और दोबारा वही ग़ल्ती ना करना।) लेना चाहिए।

५. अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम के विशेष साथी और दोस्त शुरु ही से नेक और अच्छी आदतों के मालिक थे और उन्होंने कष्ट और प्रयास से यह मकाम प्राप्त किया था।

६. अल्लाह के विशेष बन्दों और बुद्धिमानों ने अपनी बुद्धी की शक्तियों से लाभ उठा कर विजय हासिल की थी।

७. हर बुद्धिमान आला मक़ाम का मालिक होता है क्योंकि जिसकी बुद्धी पूर्ण होती है वह आलमे मलाकूत (वह संसार जहाँ फ़रिश्ते रहते हैं।) से संपर्क करके मलकूती होजाता है।

ऐसे लोग शरहे सदर करके नूरे ईलाही के मालिक बन जाते है और इसी नूर ईलाही के कारण हक़ीक़तों को देखते है।

ख़ुदा वन्दे आलम क़ुर्आन में फ़रमाता हैः

افمن شرح اللہ صدرہ للاسلام فھو علیٰ نور من ربہ فویل للقاسیۃ قلوبھم من ذکر اللہ اولئک فی ضلال مبین

क्या वह इंसान जिसका सीना ख़ुदा ने इस्लाम के लिए कुशादा कर दिया है वह अपने ख़ुदा की तरफ़ नूर का लेने वाला है और अफ़सोस उन लोगों के हाल पर जिनके दिल ईश्वर के लिए कठोर हो गए हैं तो वह ख़ुली हुई गुमराही में हैं। (वह कि जो कुफ़्र की वजह से ईश्वर की नेमतों से लाभ नही उठा सका ?) (८)

जी हाँ! बुद्धी के कमाल के माध्यम से रास्ता पाने वाले लोग ऐसे हैं कि जिनके दिल जीवित हैं और जिन्होंने दिल के अन्धेपन से नेजात प्राप्त की है जो कि बहुत ही बुरा अन्धापन है।

रसूले ख़ुदा हज़रत मोहम्मद मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम ने फ़रमायाः

شر العمی عمی القلب

सबसे बुरा अन्धापन, दिल का अन्धापन होता है।(९)

आलमे ग़ैब से संपर्क

यह बात बिल्कुल साफ़ है कि अगर कोई दिल के अन्धेपन से मुक्ति पा जाए और उसका दिल प्राकशित हो जाए तो फिर वह ईश्वर के नूर को दिल की आँखों से देख सकता है और इस तरह से दिल की आँखें खुल जाती हैं और ऐसा दिल इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुश्शरीफ के नूर से प्रकाशित हो जाता है जिस तरह कि हज़रत हालू(१०)अलैहिस्सलाम इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुश्शरीफ की आवाज़ सुन कर यह समझ जाते थे कि इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुश्शरीफ उन्हें दुनिया के किस स्थान से आवाज़ दे रहें हैं वह आवाज़ सुन कर इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुश्शरीफ के पास पहुँच जाते थे और वह दिल की आँखों से इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुश्शरीफ को देखते थे।

इमाम-ए-मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम एक लम्बी रेवायत में फ़रमाते हैं:

ألاان للعبد أربع أعين: عينان يبصر بهما أمر دينه ودنياه، وعينان يبصر بهما أمر آخرته، فاذاأراد الله بعبد خيرا فتح له العينين اللتين في قلبه، فأبصر بهما الغيب وأمر آخرته، واذاارادبه غير ذلك ترك القلب بما فيه

याद रखो कि इन्सना के लिए चार आँखें होती हैं:

दो आँखें वह हैं कि जिनसे वह इस संसार की वस्तुओं को देखता है और दो आँखें वह हैं कि जिनसे वह अपनी आख़ेरत को देखता है। जब भी ईश्वर किसी बन्दे के लिए नेकी का इरादा करता है तो उसके दिल की आँखों को खोल देता है। अतः वह उन दो आँखों से अपनी आख़ेरत को देखेगा। अगर कोई बन्दा अपने ख़ुदा के आलावा किसी और का इरादा रखता है तो ईश्वर उसके दिल को उसीकी हालत पर छोड़ देता है।(११)

ग़ैब के कामों में से एक महत्वपूर्ण काम इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुश्शरीफ का इस दुनिया में जीवित होना है। कुछ मोमिन इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुश्शरीफ को अपनी दिल की आँखों से देखेंगे।

क़ुर्आन-ए-मजीद की इस आयत में الذين يومنون بالغيب**(१२) में इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुश्शरीफ को ग़ैब कहा गया है ।**

जैसा कि अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम से इस विषय में (यानी इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फ़रजहुश्शरीफ़ को इस आयत में ग़ैब कहा गया है) वारिद हुआ है ।

स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह के जीवन के कुछ महत्वपूर्ण वाक़ेआत

स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह ऐसे लोगों में से थे जिनके दिल की आँखें खुल चुकी थीं और वह ऐसे दृश्य देख सकते थे जिनको कोई दूसरा नहीं देख सकता था और इस बात को स्पष्ट करने के लिए हम स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह की ज़िन्दगी के कुछ वाक़ेआल बयान करेंगें।

शैख़ स्वर्गीय मोहद्दिसे नूरी किताबे दारुस्सलाम में शैख़ स्वर्गीय मुल्ला तक़ी से बयान करते हैं कि जो स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह के शिष्यों में से हैं।

मैं एक यात्रा में स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह के साथ था, और स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह जिस गिरोह में थे हम लोग भी उनके साथ थे, यात्रा में एक ऐसा व्यक्ति भी था जो किसी और गिरोह में था, मगर वह भी हम लोगों के साथ हो गया। एक बार स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह ने उसको देखा और अपनी तरफ़ बुलाया। चुँकि स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह ने उसको बुलाया था तो वह उनके पास आया और उनके हाथों को चूमा, फिर स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह ने उसके ख़ानदान के एक-एक व्यक्ति के हाल चाल के बारे में विस्तार से पूछा।

उस व्यक्ति ने कहा कि सब ठीक-ठाक हैं।

जब वह व्यक्ति चला गया तो हमने स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह से पूछा कि उसकी वेश-भूषा से नहीं लगता कि वह इराक़ी है।

स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया:

हाँ ! वह इराक़ी नहीं था, बल्कि वह यमन का रहने वाला था।

हमने कहा आप तो कभी यमन गये नहीं फिर किस तरह आप यमन की भाषा जानते हैं ? और किस तरह आप उसके परीवार वालों के बारे में जानते हैं जिनके हाल-चाल के बारे में आपने उस व्यक्ति से पूछा ?

स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह ने कुछ देर सोच विचार के बाद उत्तर दिया:

ख़ुदा की कृपा : इस बात में कोई आश्चर्य नहीं है अगर तुम लोग मुझसे धरती के एक-एक बीत्ते (बालिश्त) के बारे में प्रश्न करो तो मैं तुमको सबके बारे में उत्तर दूँगा और मैं सबको पहचानता हूँ।

स्वर्गीय मोहद्दिसे नूरी फ़रमाते हैं कि स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह की बात की पुष्टि इस वाक़ेए से होती है कि नजफ-ए-अशरफ़ में सारे पवित्र स्थल जैसे, मस्जिदे कूफ़ा, मस्जिदे हन्नाना, जनाबे कुमैल की क़ब्र, हज़रत अली अलैहिस्सलाम का घर, नबी जनाब-ए-हूद और जनाब-ए-सालेह अलैहेमस्सलाम की कब्र, और इन सबको स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह ने एक-एक बित्ता मोअय्यन किया वरना उस ज़माने से

लेकर आज के ज़माने तक कुछ भी निशान बाक़ी ना रहता।

उस ज़माने के सारे धर्म गुरु स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह को बातों को मानते थे और किसी को भी उनकी बात पर कोई आपत्ति नही होती थी।

वादिउस्सलाम में हज़रत हूद और सालेह अलैहेमस्सलाम(१3)की जो पहलें कब्रें थीं उनके बारे में स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि यह उनकी क़ब्र नहीं थी फिर एक दूसरे स्थान पर स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह ने बताया और आज वही जगह है जो आज सब जवान और बूढ़े लोगों के लिए ज़ियारत का केंद्र बना हुआ है।

किताबे कूफ़ा में लिखा है कि अल्लामा सय्यद मोहम्मद मेहदी नजफ़ी कि जो स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह के नाम से प्रसिद्ध हैं यह किताब उनकी बची हुई किताबों में सबसे महत्वपूर्ण है। और उनमें एक मुक़द्दस मस्जिदे कूफ़ा है कि जिसको पुराने ज़माने में बहुत कम लोग जानते थे और दीने इस्लाम को अच्छी तरह जानने वाले बहुत कम लोगों को मोलूम था इस कारण स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह ने उन पवित्र स्थल को निश्चित करने की ज़िम्मेदरी अपने कंधों पर ली। उसमें कुछ निशानात और मेहराब बनवाए, मेहराबे नबवी में क़िबला को निश्चित करने के लिए पत्थरों का एक स्तम् (सतून) भई बनवाया। यह एक ऐसा

चिन्ह है कि जो आज भी {रख़मा}(१4) के नाम से पहचाना जाता है।

स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह के चमत्कार में एक यह भी है कि मस्जिदे सहला में इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु रजहुश्शरीफ के लिए एक स्थान है जिसको स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह ने ही निश्चित किया था और लोग इस स्थान को नहीं जानते थे, स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह ने हुक्म दिया कि फ़लाँ स्थान पर एक गुम्बद बनाया जाए ताकि उस स्थान का पता सबको चल सके।(१5)

अल्लामा शैख़ इराक़ीइन, शैख़ अबदुल हुसैन तेहरानी जब पवित्र स्थल की ज़ियारत के लिए इराक़ गए तो उन स्थानों को दोबारा बनवाने का इरादा किया। मस्जिदे कूफ़ा में जनाब-ए-मुख़तार की क़ब्र के बारे में खोज की ताकि उसको भी दोबारा से बनवाया जा सके। उनके पास क़ब्र की सिर्फ़ और सिर्फ़ एक निशानी थी कि जनाब-ए-मुख़तार की क़ब्र जामा मस्जिद से मिले हुए आंगन मुस्लिम इब्ने अक़ील में हानी इब्ने उरवा के हरम के सामने है।

अतः उन्होंने उसे खोदा तो वहाँ हमाम के लक्षण मिले जिससे यह सपष्ट हो गया कि यहाँ जनाब-ए-मुख़तार की क़ब्र नहीं है और उसके लक्षण ख़त्म हो चुके हैं। लेकिन अभी तक शैख़ उसकी खोज में थे कि स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह के पुत्र ने उनसे कहा कि जब भी स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह

अलैह मस्जिदे कूफ़ा के पूरबी दीवार से गुज़रते कि जो अब जनाब-ए-मुख़तार की कब्र है तो कहते कि जनाब-ए-मुख़तार के लिए एक सूरए फ़ातिहा पढ़ लें। और फ़िर स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह सूरए फ़ातिहा पढ़ते।

शैख़ ने हुक्म दिया कि उसको खोदा जाए और उनके हुकम को माना गया और उस जगह को खोदा गया तो वहाँ से एक पत्थर निकला जिस पर लिखा हुआ था कि यह मुख़तार इब्ने अबी ओबैदा सक़फी की क़ब्र है। अतः यह स्पष्ट हो गया कि यहां जनाब-ए-मुख़तार की कब्र है।(१6)

लक्षण और निशानियाँ

ख़ानदाने इस्मत व तहारत के प्रवचनों में ज़हूर के बा बरकत ज़माने के बारे में कुछ महत्वपूर्ण नोकात मोजूद हैं कि जिसको कुछ लोग बरदाशत करने की क्षमता नहीं रखते जिस तरह कि कुछ दूसरे मसलों के बारे में लोगों को बरदाशत की क्षमता नही है इसी कारण अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम ने अपने ख़ास साथियों को अपने रहस्य से आगाह किया जिस तरह उन्होंने ना अहलों से ऐसी बातों को छिपा कर रखा।

उन्होंने रहस्यों के अलावा भी कुछ बातें इरशाद फ़रमायी कि जिनको उन लोगों ने दुनियावी होने के कारण स्वीकार किया अतः ख़ुदा ने लोगों को समझाने के लिए कुछ ऐसे वाक़ेआत बयान किये जिस के माध्यम से

अहलेबैत अलैहुमस्सलाम के फ़रमान लोगों के मास्तिष्क में पैवसत हो जाए।

ग़ैबत के ज़माने में ज़िन्दगी गुज़ारने वाले कि जिन्होंने ज़हूर के ज़माने की प्रकाशमयी को देखा ही नहीं वह किस तरह ऐसे शुभ समय के बारे में सोच सकते हैं ?

ग़ैबत के कठिन ज़माने में ज़िन्दगी गुज़ारने वाले कि जिन्होंने नेजात के ज़माने की आज़ादी को देखा ही नहीं वह किस तरह ज़हूर के ज़माने की उन्नति और प्रगति का किस तरह विश्वास कर सकते हैं ?

ख़ुद को धरती का मालिक समझने वाले किस तरह अपने माल व दौलत को बरबाद होने के बारे में सोच सकते हैं ?

जो लोग आँखों से देखे बिना किसी चीज़ को स्वीकार नहीं करते उनपर ईश्वर किस तरह अपनी हुज्जत तमाम करेगा ?

एक आम इंसान और आश्चर्यजनक दिमाग़

तारीख़ को पढ़ने से इस उत्तर के प्रश्न में कोई कठिनाई नहीं होगी और इसका उत्तर देना बहुत ही आसान होगा, कि ग़ैब से सहायता, तारीख़ में होने वाले आश्चर्यजनक वाक़ेआत और घटनाएँ ऐसे लोगों के लिए ठोस उत्तर है।

तारीख़ के दुष्ट लोगों को अश्चर्य में डालने वाली घटनाएँ बहुत ज़्यादा हैं। अतः हम अस्ल बहस की तरफ़ वापिस आते हैं कि जिसको ज़हूर के ज़माने में पूर्ण बुद्धी कहा गया है।

हम इस बारे में यह कहेंगे कि इसांन सीमित दिमाग़ से किस तरह इतनी आश्चर्यजनक घटनाओं को समझ सकता है और किस तरह आशचर्यजनक शक्तियों का मालिक हो सकता है ?

इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले हम इस स्थान पर एक आशचर्यजनक व्यक्ति का वाक़ेआ बयान करेंगे कि जिसके दिमाग़ में परिवर्तन होने के कारण वह आशचर्यजनक शक्तियोँ का मालिक बन गया। अगरचे हम को ऐसे वाक़ेआत बयान करने की आवश्यकता नहीं है लेकिन हम ऐसे वाक़ेआत पर कुर्बानी देने वाले लोगों को, सजाझ को समझाने के लिए बयान कर रहे हैं।

हॉण्लैड के पीटर हॉरकस को दुनिया का आशचर्यजनक व्यक्ति और रॉडार कहा गया है। इस लिए कि वह उन पाँच शक्तियोँ के आलावा कि जो हर इंसान में पायी जाती हैं एक और छठी शक्ति का भी मालिक था। वह लोगों के दिमाग़ में पायी जाने वाली बातों को पढ़ सकता था और यह भी बता सकता था की इस समय वह क्या सोच रहा है। पीटर हॉरकस की बातें दुनिया के कोने-कोने में होने लगीं और वह दुनिया के कोने-कोने में प्रसिध्द हो गया। उसके साथ ना सिर्फ़ इंसान बल्कि दुनिया की बेज़बान और बेजान वस्तुएँ भी बात करती वह अपनी छठी शक्ति की सहायता से अतीत की घटनाएँ और अतीत में गुज़रे हुए लोगों के बारे में भी ख़बर देता था ।

वह दुनिया के भविष्य और लोगों के भविष्य के बारे में आश्चर्यजनक बातें भी बताता था कि जो हमेशा सही होती थी।

पीटर हॉरकस पर परीक्षण करने वाले सब डॉक्टरों और मनोवैज्ञानिकों ने भी इस बात की पुष्टि की थी कि पीटर एक अलग तरह की शक्ति का मालिक है। अब तक दुनिया की १६ मुल्कों की पुलिस पीटर की सहायता से जुर्म की अलग-अलग घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करके उसको खतम कर चुकी है और अब उसके पास विश्वस्तरीय कार्ड भी है।

उसे यह शक्ति कैसे प्राप्त हुई ?

पीटर के जीवन में एक बहुत आश्चर्यजनक बात जो थी वह यह थी कि उसे यह छठी इन्द्रिय (हिस) उसकी माँ के पेट से नहीं मिली थी। वह ३२ वर्ष तक एक आम इंसान की तरह ही था जिसके पास पाँच इन्द्रिय के अलावा कोई और इन्द्रिय नहीं थी लेकिन १९४३ में जब एक दिन वह अपने विमान से धरती से दस मीटर की ऊँचाई से गिरा और बेहोश हो गया। वह ख़ुद कहता है कि धरती से टकराने के बाद पहले मेरे मस्तिष्क में मेरी ज़िन्दगी की सारी घटनाएँ घूम गयीं और यहाँ तक कि मुझे यह भी याद आ गया कि एक बार मुझे कुत्ते ने काटा था। जब मैं ज़मीन और आसमान के बीच में था तो मैं सिर्फ़ यह सोच रहा था कि मैं मरना नहीं चाहता था।

इस घटना के चार दिन बाद उसे हस्पताल के बेड पर होश आया तो वह सर में बहुत दर्द महसूस कर रहा था और वह दर्द के कारण चिल्ला रहा था। नर्स ने उसे बताया कि गिरने के कारण उसका सर फट गया है और उसे बहुत गहरी चोट आयी है जब पीटर ने यह ख़बर सुनी तो उसका कोई उत्तर नही दे सका। वह बहुत थका हुआ था। लेकिन वह अपने अंदर कुछ अजीब परिवर्तन महसूस कर रहा था। जब नर्स कमरे से गयी तो पीटर ने अपने बग़ल वाले मरीज़ की तरफ़ देखा यह वह समय था कि जब उस के अंदर एक अलग शक्ति पैदा हो गयी।

पीटर में एक इल्हामी स्थिति पैदा हुई, उसने अपने साथ वाले मरीज़ों को पहले कभी नहीं देखा था, और उसने उन लोगों से पहले कभी बात नहीं की थी लेकिन एक ही लम्हे में उसने महसूस किया कि वह उन बीमारों को जानता है यहाँ तक कि उन मरीज़ों के अतीत और भविष्य के बारे में भी जानता है यह इल्हाम इस क़दर अजीब था कि वह अपने मस्तिष्क में पैदा होने वाले इल्हाम को उजागर करने से ना बच सका और उसने कहा कि तुम लोग सत्य के पुजारी नहीं हो।

एक बीमार ग़ुस्से में बोला : जी हाँ, मगर तुम यह बात कैसे जानते हो ?

पीटर ने कहा कि इसलिए कि तुम्हारा बाप एक हफ़ता पहले मर गया और उसने तुम्हें यादगार के लिए एक क़ीमती घड़ी दी थी। लेकिन तुमने अपने बाप की घड़ी को

बेच दिया । साथ वाले मरीज़ ने आश्चर्य से कहा कि यह तुमहें कैसे मालूम है ?

उस दिन के बाद वह इंसान पीटर को भूत या जिन समझने लगा और उससे डरता था। यूँ पीटर ने पहली बार अपनी इस इन्द्रिय (हिस) को इस्तेमाल किया कि जिसने उसके जीवन को बदल कर रख दिया ।

किसी अंजान वस्तु का उस के दिमाग़ में परिवर्तन करना

वह खुद कहता है कि मैं नहीं जानता कि क्या हुआ लेकिन इतना अवश्य जानता हूँ कि एक बिजली की लहर जैसी वस्तु ने मेरे दिमाग़ को साफ़ कर दिया है और उसमें कुछ नये विचार पैदा कर दिए हैं। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि मैं पागल हो गया हूँ। और कभी यह प्रार्थना करता हूँ कि सच में पागल ही हो जाऊँ ताकि इस छठी इन्द्रिय से मुक्ति पा जाऊँ। क्योंकि जो कोई भी मेरे पास आता है मैं उसको देख कर ही उसके अतीत को जान लेता हूँ उसकी तमाम कामनाओं और दुखों को जान लेता हूँ। और मेरा दिल यह कहता है कि यह चोर है, आज उसने अपनी पत्नी पर ज़ुल्म किया है, उसने आज फ़लाँ काम किया है।

लेकिन यह सब जान कर मुझे दुख होता है, मैं लोगों के राज़ की बातें नही जानना चाहता लेकिन मेरे पास इसके अलावा कोई और रास्ता भी नहीं है। किसी से इस बारे में बात करने से पहले ही मेरा दिमाग़ मुझे सब कुछ उसके बारे में बता देता है। होश में आने के चार या पाँच

दिन के बाद पीटर ने एक बीमार को देखा कि जो हस्पताल से जा रहा था । पीटर उस से हाथ मिला रहा था कि उसे विदा करे मगर उसके अंदाज़े के बर ख़िलाफ़ यह महसूस हुआ कि वह व्यक्ति हॉलैंण्ड का नहीं है बल्कि इंगलैंण्ड का है कि जो एक खुफिया इंटेलिजेंट एजेंसी का जासूस है और हालैंड जासूसी करने के लिए ही आया है।

पीटर उसी समय समझ गया कि गशतापू (जासूसी के विरुध्द जरमनी की बनाई हुई फोर्स) को इस बारे में ख़बर हो गई है और वह उसे पकड़ कर जल्द ही क़त्ल कर देंगे। वह अपने दिमाग़ में जासूस के रहने की जगह को भी जान गया कि वह कालूर स्ट्रीट में रहता है वह उस जासूस को इस बारे में बताना चाहता था लेकिन वह जासूस जल्दी में वहाँ से निकल गया ।

पीटर ने यह सारी बात डाक्टरों को बतायी कि वह हर हालत में जासूस को इसकी ख़बर देदें। दो दिन के बाद जर्मन पुलिस ने उस जासूस का कालूर स्ट्रीट पर पीछा किया और उसको पकड़ लिया और क़त्ल कर दिया। पीटर कि भविष्वाणी से जासूस को कोई लाभ नहीं हुआ और पीटर पर भी हॉलैंण्ड की पुलिस शक करने लगी और उससे कहा कि जब तुमको पहले से ही पता था तो फिर तुमने बताया क्यों नहीं इसका मतलब है कि तुम भी गशतापू के जासूस हो, और यह शक इतना बढ़ा कि दो दिन के बाद ही दो लोगों ने हस्पताल में ही तकिये से उसका मुंह दबा कर मारने का प्रयास किया लेकिन इस

बार उस की छठी इन्द्रिय ने उसकी सहायता की और उसको मौत के मुंह से बचा लिया।

दूसरी भाषा में बात करना

उसे मारने का प्रयास करने वालों में एक हिस्पान का था जब वह व्यक्ति उसके मुंह और नाक पर तकिया रख कर दबा रहा था तो पीटर ने उस को हिस्पानवी भाषा में कहा " कूमू आबू दूरू दाला मुयराना " जब्कि पीटर को हिस्पानवी भाषा का एक शब्द भी नहीं आता था । हिस्पानवी ने तकिया हटा कर आश्चर्य से कहा कि यह आश्चर्यजनक बात है कि यह मुझ से कह रहा है कि तुम मुझे क़त्ल करने से डर रहे हो और मैं इस समय यही सोच रहा था। कुछ देर चुप रहने के बाद हिस्पानवी कहता है कि मैं तुम्हारी बात पर विश्वास करता हूँ मैं यह सोच रहा था लेकिन तुम मुझे बुरा भला मत कहना। आख़िर ऐसी अजीब शक्ति को किस तरह स्वीकार किया जा सकता है ?

उस घटना के बाद पीटर की घटना पूरे हस्पताल में प्रसिद्ध हो गयी अब वह यह महसूस कर रहा था कि वह सबसे अलग एक अलग इंसान बन जाएगा। अब वह अपनी छठी इन्द्रिय (हिस) से डरता नहीं था, बल्कि वह उसके माध्यम से पैसा कमाना चाहता था जब वह अपने घर वापस गया तो कोई उसको पहचान नहीं सका उसकी माँ का कहना था कि मेरा बेटा काल्पनिक हो गया है पीटर ख़द भी कहता था कि मैं पहले जिन कठिनायों (परीशानियों) का सामना कर रहा था अब भी इन्हीं

कठिनायाँ का सामना कर रहा हूँ। जब कोई पड़ोसी मेरी चापलूसी करता है तो मैं उसका दिमाग़ पढ़ लेता हूँ और उसको बता देता हूँ कि वह झूट बोल रहा है। मैं यह भी समझ चुका था कि मेरी माँ, बहन, और मेरे भाई भी मुझ से बहुत सारी बातें छुपाते हैं। लेकिन अब कोई मुझसे झूट नहीं बोल सकता था। लेकिन जब मैं लोगों के झूट के बारे में जान लेता हूँ तो मुझे बहुत दुख होता है।

किसी अंजान शक्ति का उसके दिमाग़ को ख़बर देना

क्या यह छठी इन्द्रिय (हिस) कोई तोहफ़ा थी या तकलीफ़ ?

इस बारे में पीटर का कहना था कि मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता हूँ। मैं सिर्फ़ इतना जानता हूँ कि कोई शक्ति है जो भविष्वाणियाँ को मेरे दिमाग़ में डातली है। अब मैं सारे इंसानों से पहले ईश्वर से नज़दीक होना चाहता हूँ। क्योंकि ईश्वर ने करोड़ों इंससानों में से सिर्फ़ और सिर्फ़ मुझ पर कृपा की है और मुझे यह नेमत दी है। अतः मैंने यह इरादा किया है कि इस राडार जैसी वस्तु को लोगों के फ़ायदे के लिए इस्तेमाल करूं। अब मुझे एक नये जीवन का आरम्भ करना है। कयोंकि मैं अपनी अतीत को भुला देना चाहता हूँ और वह कोई काम नहीं करना चाहता हूँ जो मैंने अपने अतीत में किया था। इस नयी इन्द्रिय (हिस) के कारण मैंने अपनी पुरानी हिस (इन्द्रिय) खो दी है। मैं किसी भी विषय के बारे में १० या १५ मिनट से ज़्यादा नहीं सोच सकता हूँ। क्योंकि हर पल मेरे मसतिष्क

में हजारों बातें घूमती रहती हैं। अगर मैं किसी भी विषय के बारे में सोचना भी चाहूँ जैसे अगर एक कील ठोकने के बारे में सोच विचार करूँ तो अचानक मेरे चेहरे का रंग बिगड़ जाता है, मेरी सांस रुकने लगती है और जिस कुर्सी पर मैं बैठा रहता हूँ ऐसा लगता है वह हिलने लगी है।

बेज़बानों से बात चीत

जब भी मेरे कमरे में कोई प्रवेश करता तो मेरा दिमाग़ उसके बारे में सोचने लगता था और मुझे उसका अतीत और भविष्य सब मालूम हो जाता है यह बात सिर्फ़ उस व्यक्ति तक सीमित नहीं थी बल्कि उसके साथ जो भी वस्तुएँ रहती उसके बारे में भी मुझे पता चल जाता जैसे किताब, बैग, फ़ोटो, रूमाल और ऐसी जितनी भी वस्तुएँ उसके साथ होती।

यहाँ तक कि बियाबान में भी मुझे सकून नहीं मिलता, पत्थर और पेड़ पौधे भी मुझे अपनी कहानी सुनाते । उस मुसीबत से मुक्ति पाने का रास्ता यह था कि मैं किसी ऐसे ख़ाली कमरे में बैठा रहूँ कि जहाँ कोई भी ना हो उस कमरे से बाहर ना निकलुं। मगर मेरी तरह ३४ वर्ष का व्यक्ति बिल्कुल राहिबों (राहिब उन लोगों को कहा जाता है जो दुनिया और उस की वस्तुओ को छोड़ कर एकांत मे जीवन बिताते हैं) की तरह जीवन नही बिता सकता था।

मेरे पास सिर्फ़ एक रास्ता था कि मैं ऐसे रास्ते को चुनूँ कि जिसमें मैं अपनी इस हिस (इन्द्रिय) का प्रयोग करते हुए सिर्फ़ और सिर्फ़ अपना जीवन बिताने का रास्ता चुन लूँ और सबको छोड़ दूँ। और अब जबकि मुझे अपनी इस

छठी हिस (इन्द्रिय) से एक मिनट की भी मुक्ति नहीं मिलती तो मैं उस हिस का हुक्म मानने को मजबूर था। उस दिन के बाद पीटर का जीवन उस छठी हीस (इन्द्रिय) से जुड़ चुका था। मैंने स्वतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर अपनी इस छठी हिस (इन्द्रिय) के बारे में लोगों को बताया। मैंने हाल में बैठे सारे लोगों से अपने जीवन के बारे में एक या दो घंटे तक निरन्तर बताया ।

रॉडार के नाम से प्रोग्राम

पीटर बहुत जल्द ही हॉलैण्ड, फ़्रांस, और यूरोप में प्रसिद्ध हो गया। आज पीटर अमेरिका का नागरिक है। जो टेलीवीज़न पर रॉडार के नाम से एक प्रोग्राम चला रहा है।

इस प्रोग्राम में वह टेलीवीज़न पर बैठा रहता है और देखने वाले सैंकड़ों किलो मीटर की दूरी पर बैठे हुए उससे प्रश्न करते हैं वह उन लोगों को देखे और पहचाने बिना ही सैंकड़ों किलो मीटर की दुरी से उसके प्रश्न का उत्तर देता है। और उनके भूतकाल और भविष्य के बारे में ख़बर देता है।

वह ख़ुद भी कहता है कि उसका लक्ष्य ऐसे लोगों की सहायता करना है जिनको उसकी आवश्यकता है। जैसे कि मैं चाहता हूँ कि लोगों के कार्यों में मैं उसकी सहायता करूं या खोए हुए बच्चों की खोज करूं।

पीटर ने हजारों खोए हुए लोगों की खोज की है। पुलिस को सैंकड़ों चोरी के बारे में भविष्यवाणी की है। सैंकड़ों कानों का पता लगाया है। कई बार चोरों और हत्यारों को पकड़वाने में पुलिस की सहायत भी की । मगर वह अपने

खुद के कार्यों में और जुए में अपनी इस छठी हिस (इन्द्रिय) का प्रयोग नहीं करता क्योंकि अगर वह जुआ खेले तो फिर पूरी दुनिया की दौलत जीत सकता है।

वह खुद भी कहता है कि ईश्वर ने लोगों की सहायता के लिए मुझे यह छठी हिस (इन्द्रिय) दी है ना कि माल व दौलत इकट्ठा करने के लिए।

एक दिन वैनेकोतिन शहर में एक घर में आग लग गयी और आग कैसे लगी इस बात का पता लगाने के लिए हॉलैंण्ड की पुलिस ने पीटर से उसके बारे में सहायता माँगी, क्योंकि पुलिस चार महीने की तहक़ीक़ के बावजूद उस के बारे में कुछ भी पता ना कर सकी।

पीटर ने तुरंत उन्हें बताया कि में एक औरत को देख रहा हूँ कि जो उस घटना वाले स्थान पर अपना एक दस्ताना रखे हुए है और वह अफीम और दूसरे नशीले पदार्थ में लगी हुई है।

पुलिस वालों ने कहा कि उन लोगों ने वहाँ कोई दस्ताना नहीं देखा था। उस समय पुलिस ने जब दोबारा वहाँ खोज बीन की तो उसको एक दस्ताना मिल गया। यह दस्ताना पैरिस की एक दुकान से ख़रीदा गया था, उसके मालिक को खोजना बहुत कठिन था। मगर पीटर ने उस औरत की दूसरी विशेषता भी बयान किया कि औरत का पति मर चुका है और वह औरत अफ़ीम पीती है।

जब पीटर के कहने के अनुसार उसको गिरफ़्तार किया गया तो उसने यह स्वीकार किया कि वह अफ़ीमची है और नशीले पदार्थ बेचने के लिए उसने एक दुकान भी किराय

पर ली हुई है। इस तरह पीटर की सहायता से पुलिस ने एक स्मगलिंग के गिरोह को पकड़ लिया, और उस घटना के बाद पुलिस ने बाक़ाएदा पीटर का शुक्रिया भी अदा किया।

हम सब छठी इन्द्रिय (हिस) रखते हैं। अमेरिका के प्रसिद्ध उस्ताद, प्रोफ़सर पू हारलीस एक साल से पीटर के बारे में पढ़ रहें हैं। अन्होंने ऐलान किया कि पीटर की छठी हीस (इन्द्रिय) में कोई आशंका नही है कि जो रॉडार की तरह हर चीज़ को जान लेता है । मैं सिर्फ़ इतना जानता हूँ कि उसकी छठी हिस (इन्द्रिय) बहुत ज़्यादा संवेदनशील है, जब वह बीमार, या ग़ुस्सा हो तो उसकी छठी हिस (इन्द्रिय) दुसरी हिस से जल्द प्रभावित हो जाती है ।

इतिहास में दो या तीन और लोग भी भविष्यवाणी करने वाले थे कि जिनके पास भी यही हिस (इन्द्रिय) थी। मगर पीटर वह अकेला इंसान है कि जिसको यह हिस पैदाइशी नहीं बल्कि ३२ वर्ष के बाद मिली थी। वह खुद भी कहता है कि सब लोगों के पास छठी हिस होती है और कभी आपको भी यह इत्तेफ़ाक़ हुआ होगा कि घटना से पहले ही उस बात का ज्ञान हो जाता है जैसे कि कभी किसी गाँव में प्रवेश करें तो ऐसा लगता है कि हम वह स्थान पहले कभी देख चुके हैं। मेरे ख़याल के अनुसार इंसान के दिमाग़ में पाँचों हिस (इन्द्रिय) की तरह छठी हिस के लिए भी एक स्थान है और मेरे साथ होने वाली घटना ने उस हिस को उजागर कर दिया।(१7)

इस घटना में गिरने और दिमाग़ पर चोट लगने के कारण पीटर में छुपी हुई शक्ति उजागर हो गई ।

उसे ऐसी शक्ति मिल गई कि जो दूसरों के पास नहीं थी। इंसान भी अक़्ली तकामुल (बुद्धी पूर्णा) के माध्यम से छिपी हुई शक्तियाँ प्राप्त कर सकता है।

बुद्धी की आज़ादी

जब इंसान अपने अंदर छिपी हुई शक्तियों को पहचान कर उसको प्राप्त कर ले और उसकी अक़्ल मोकम्मल हो जाए तो उसकी बुद्धी आज़ाद हो जाती है यह आज़ादी के महान प्रकारों में से एक है, जो कि ज़हूर के प्रकाशमय ज़माने में सबको प्राप्त होगी।

बुद्धी के शैतानी और मनोवेगी इछाओं से आज़ाद होने के बाद इंसान आसानी से अपनी बुद्धी की शक्तियों से लाभ उठा सकता है। हर इंसान की बुद्धी में कुछ शक्तियाँ काम करती हैं कि जो अक़्ल के हुकम की आज्ञा का पालन करती हैं।

अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम ने इस बात को विस्तार से बयान किया है और यही वह महान लोग हैं कि जो इंसान के जीवन के हर पहलू को अच्छी तरह से जानते हैं।

हज़रत इमाम-ए-जाफ़रे सादिक़ अलैहिस्सलाम एक रेवायत में बुद्धी के सारे पहलूओं को बयान फ़रमाते हैं (और वह रेवायत बहुत लम्बी है जिस को हम यहाँ बयान नहीं करेंगे ।)(१8)

इस रेवायत में बुद्धी की ७० महान विशेषता को बयान किया है और उसे एक फौज की तरह कहा है, उसी तरह

जहल (अनपढ़ होने को) की भी ७० बुरी आदतों को बयान किया है।(19)

ग़ैबत के ज़माने में नफ़्स (मनोवेग) की बहुत बड़ी फ़ौज है और ज़्यादातर लोग नफ़्स के हाथों गिरफ्तार हैं। और उनका नफ़्स जो कुछ भी उनसे कहता है वह वही करते हैं मगर ज़हूर के पवित्र ज़माने में जब अक़्ल मोकम्मल हो जाएगी तो नफ़्स (मनोवेग) भी पवित्र हो जाएगा, फिर सिर्फ़ और सिर्फ़ अक़्ल की बात सुनेगा।

इंसानो में अक़्ल का मोकम्मल होना यानी अक़्ल की फ़ौज का पूर्ण होना है इसी कारण इंसानों में ज्ञान, शक्ति, और समझ-बूझ सब पूर्ण हो जाएँगी। और कमज़ोरी, जाहिलियत, की मौत और हार होगी ।

अपनी असली हालत कि परफ़ पलटना

यह बात बिल्कुल साफ़ है कि नफ़्स (मनोवेग) की हार और अक़्ल (बुद्धी) की ७० शक्तियों के मिलने के कारण इंसान को एक नया जीवन मिलेगा। फिर हर इंसान अपनी असली हालत की तरफ़ पलट आ एगा। अपनी असली हालत की तरफ़ पलटने का मतलब यह है कि इंसान को ऐसी शक्ति प्राप्त हो जाएँगी कि जिसको वह नफ़्स कि आज्ञा का पालन करते हुए प्राप्त नहीं कर सका था। मगर अब इस शक्तियों से लाभ उठाएगा।

अगर हम " उसूले काफ़ी " में से अक़्ल व जेहल की बहस को यहाँ बयान करते तो यह बहस बहुत लम्बी हो

जाती इसलिए हम उसको यहाँ बयान नहीं करेंगे अतः हम उसको यहीं पर छोड़ते हैं और आगे बढ़ते हैं।

जो रेवायत हम ने बयान की है जिसमें हमने अक़्ल व जेहल के ७० अर्थ और उसकी विशेषता को बयान किया है उसपर सोच-विचार बयान करने से हमको यह पता चलता है कि इंसानी समाज हवाओ हवस (मनोवेग इछाएँ) में डूबा हुआ है और अपने नफ़्स का गुलाम है। बहुत कम लोगों के अलावा किसी का भी अक़्ल से कोई सम्बंध नहीं है। इस रेवायत से यह पता चलता है कि कामिल अक़्ल (पूर्ण बुद्धी) का मालिक वह इंसान है जो कि अक़्ल की बात सुनता है दिल और नफ़्स की नहीं और उस ने नफ़्स को कुचल कर उसपर विजय प्राप्त की है।

इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ का ज़हूर इंसानों की अक़्ल को मोकम्मल करने और इंसानियत को प्रगति प्रदान करेगा। और अक़्ल के मोकम्मल होने से जेहल का ख़ातम (समाप्ति) हो जाएगा। और फ़िर जेहल का कोई नाम व निशान भी बाक़ी नहीं रहेगा। नफ़्स को पराजित करने के बाद इंसानों के अंदर एक आश्चर्यजनक परिवर्तन होगा कि जिससे इंसानों का जीवन बदल जाएगा और बुराईयों की जगह अच्छाईयाँ होंगी और सब के सब सफ़लता की ओर विचरित होंगे।

क्या ज़हूर से पहले अक़्ल का मोकम्मल होना संभव है ?

कुछ लोगों का मानना यह है कि दुनिया वाले अपनी अक़्ल को मोकम्मल करने का प्रयास करें ताकि इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ का ज़हूर निशचित हो जाए और जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक ज़हूर संभव नहीं होगा।

क्या यह अक़ीदा सही है ?

इस प्रश्न का उत्तर यह है कि यह सही है कि दुनिया वालों की बुद्धी पूर्ण होने पर ही इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ का ज़हूर निर्भर है। लेकिन यह बात याद रहे कि इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ का ज़हूर दुनिया वालों की अक़्ल के पूर्ण होने से सम्बंधित नहीं है । इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ के ज़हूर से संमबधित ऐसे अक़ीदे रेवायत के अनुसार ग़लत हैं।

अगर इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ का ज़हूर दुनिया वालों की अक़्ल के पूर्ण होने पर निर्भर है तो फिर ऐसी बहुत सी रेवायात को बाहर निकाल कर फेंकना होगा जिनमें इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ के साथियों के युद्ध को बयान किया गया है। दुश्मनों का होना और उनका इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ से युद्ध करना बुद्धी के पूर्ण ना होने की साफ दलील है। अतः किस तरह यह दावा किया जा सकता है कि ज़हूर से पहले सारे लोगों की अक़्लें पूर्ण हो जाएँगी कि वह इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ के राज्य को स्वीकार करने की क्षमता रखते हों।

इसके अलावा भी इस बात पर बहुत सारी रेवायात पायी जाती हैं कि ज़हूर से पहले लोगों की बुद्धियां पूर्ण नहीं होंगी। रेवायात को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि जिस तरह इल्म (ज्ञान) का पूर्ण होना इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ के ज़हूर से सम्बंधित है उसी तरह समाज की अक़्लों का मोकम्मल होना भी इमाम-ए-ज़माना अज्जलल्लाहु फरजहुश्शरीफ के ज़हूर पर ही निर्भर है।

दिमाग़ की शक्ति

अब हम दिमाग़ की शक्ति के बारे में बहस करेंगे अतः हम कह सकते हैं कि अभी तक इंसान अपने दिमाग़ कि शक्तियों से पूरी तरह लाभ नहीं उठा सका है।

बहुत से लेखकों ने इस बारे में लिखा है कि अभी तक इंसान अपने दिमाग़ की शक्ति से पूरी तरह लाभ नहीं उठा सका है और वह इससे मजबूर भी है कि अपने से अपने दिमाग़ की शक्तियों से लाभ उठाए। हम यहाँ इस बात को साबित करने के लिए कुछ मिसाल बयान करेंगे। आम तौर पर हमारे दिमाग़ की बहुत कम शक्तियों का प्रयोग होता है जब कि उसको प्रयोग करने के लिए हर इंसान आज़ाद है कि जैसे चाहे अपने दिमाग़ का प्रयोग करे। लेकिन अफ़सोस कि हम लोग कभी-कभार ही अपने दिमाग़ की शक्तियों से लाभ उठा पाते हैं।(२0)

यह कहना भी ग़लत नहीं होगा कि इंसान अपनी सारी क्षमता का प्रयोग करने के बाद भी अपने दिमाग़ के

करोड़वें भाग से भी लाभ नहीं उठा पाता है, या लाभ नहीं उठा सका है।(२1)

और इस बात में भी किसी तरह की कोई शंका नहीं है कि हम आज तक नहीं जान सके हैं कि सोच-विचार करते समय हमारे दिमाग़ की क्या प्ररिस्थिति होती है अतः इस बात से साफ़ हो जाता है कि इंसान अपने दिमाग़ की शक्तियों का पूरी तरह से प्रयोग नहीं कर सका है, लेकिन जिस दिन ख़ुदा का हाथ सारे इंसानों के सरों पर होगा उस दिन इंसान के दिमाग़ में छिपी हुई सारी शक्तियाँ उजागर हो जाएँगी और इंसान की बुद्धी पूर्ण हो जाएगी।(२2)

इंसान की तमाम सफ़लता उस के दिमाग़ में छिपी हुई है।

इंसान का दिमाग़ १४ अरब सेल्स से पैदा हुआ है और हर सेल, दूसरे सेल्स से जुड़ा हुआ है। यह दिमाग़ की शक्ति जिसको एक आम इंसान सोच भी नहीं सकता और इस को सिर्फ़ माहेरीन (एक्सपर्ट्स) ही बता सकते हैं।

हमारे पास अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम की ऐसी रेवायात हैं कि जिनके होते हुए हमें किसी दूसरे की बात बयान करने की आवश्यकता ही नहीं है। मगर अपनी बात की पुष्टी के लिए कुछ लोगों के वाक़ेआत को बयान करना भी आवश्यक है कि जो आम इंसानों से कहीं ज़्यादा दिमागी शक्तियों के मालिक थे और जिससे यह भी पता चलता है कि दिमाग़ में बहुत सी शक्तियाँ छिपी हुई हैं।

"अगाउन" नाम के एक व्यक्ति ने अपने जीवन काल में २५०० किताबों को पढ़ा उसे यह सारी किताबें याद थीं

उससे भी आशचर्यजनक बात यह थी कि वह एक सेकेंड भी सोचे हुए उस किताबों को पढ़ सकता था।(२3)

कुछ दिन पहले की बात है जब दुनिया के सारे अख़बार, पत्रकार, पत्रिकाएं और टेलीवीज़न चैनल्ज़ वाले हुसैन क़ादरी नाम के व्यक्ति के बारे में चर्चा कर रहे थे कि उसका दिमाग़ आम इंसानों से कहीं ज़्यादा है और उसको पूरे इतिहास के बारे में मालूम है। और वह हर प्रश्न का उत्तर बिना सोच-विचार के देता है । हुसैन क़ादरी के दिमाग़ में बहुत से बुजुर्गों की जन्म-तिथि और मृत्यु-तिथि हैं जो कि उसको हमेशा याद रहती हैं और वह कभी नहीं भूलता इससे भी ज्यादा आश्चर्यजनक बात यह थी कि उसने ऊर्दु महीने के अनुसार एक जनतरी बनायी थी कि जिसके दो भाग थे। एक हिस्से को १६ साल के दौर के हिसाब से बनाया था जिसमें हफ़्ते के दिन और १९०१ से लेकर २००० तक के सारे दिनो को भी लिखा था । और उसमें हर महीने की महत्वपूर्ण घटनाओं को भी लिखा था।

दूसरे भाग में १५०१ से लेकर १५७० साल तक के दिनों को लिखा था इस भाग में दिनों के नाम, महीनों के नाम हफ़्तों के नाम को ईसवी के अनुसार लिखा था।

इस जनतरी में एक भाग और भी था जिसमें ईसाइयों की महत्वपूर्ण तिथियों को लिखा था। और उसमें ३००० वर्ष तक के दिनों को लिखा था।

इंसान के दिमाग़ की शक्तियों को बताने के लिए और भी बहुत सी घटनाएँ हैं जो इस पर दलील हैं इसी तरह

यह ग़ैबत के ज़माने में बुद्धी के पूर्ण होने को भी बयान करता है। गणित के यह माहेरीन कुछ सेकेंड में ही ऐसे प्रश्नों को हल कर देते हैं।

बुद्धी का पूर्ण होना क्या है ?

बुद्धी पूर्णता की बहसों ने बहुत से पश्चिमी लेखकों अपनी तरफ़ आकर्षित किया है वह अपनी इल्मी योग्यताओं का दावा करते हैं लेकिन उसके बावजूद उनका यह मानना है कि एक दिन ऐसा भी आएगा जब आज की बनिसबत इंसानों की बुद्धियाँ खरबों गुना ज़्यादा हो जाएँगी।

पश्चिमी लेखकों मेंसे एक नाम करज़वील है जिसका मानन है कि कोई भी इंसान दिमाग़ में सिर्फ़ और सिर्फ़ १०० खरब जानकारी जमा कर सकता है, संभव है कि आपकी नज़र में यह एक बहुत बड़ी संख्या हो। मगर इन्सान के दिमाग़ का अब भी बहुत प्रयोग नहीं हुआ है और वह अभी भी कोरे काग़ज़ की तरह ही है। क्योंकि भविष्य में इन्सान का दिमाग़ आज से कहीं ज़्यादा होगा और अरबों और खरबों गुना ज़्यादा होगा।

इस में महत्वपूर्ण नुकता यह है कि वह संसार के रहस्य जिनको इन्सान अभी तक नहीं जान सका है।

और पश्चिमी लेखकों को जो संसार के यह रहस्य अभी तक समझ नहीं सके हैं यह अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम से दूरी का नतीजा है । बावजूद इसके वह बुद्धी के पूर्ण होने को स्वीकार करते हैं। लेकिन उन्हें उसकी परिस्थिति के बारे में कोई जानकारी नहीं है इसलिए वे लोग अपनी

बातों में ग़ल्तियाँ करते हैं। लोग हर चीज़ को यहाँ ताकि बुद्धी के पूर्ण होने को भी इसी ज़ाहिरी आँखों से देखते हैं जबकि यह तो दिल की आँखों से देखने की चीज़ है।

इरादा (दृढ़ निश्चय)

यहाँ तक हम लोग दिमाग़ की शक्तियों को जान चुके हैं। और यह भी जानकारी प्राप्त हो गयी कि अभी तक इंसान अपने दिमाग़ की शक्तियों से पूरी तरह लाभ नहीं उठा सका ।

अब हम इरादे की शक्तियों को बयान करेंगे। इंसान की बुद्धी का पूर्ण होना उसके इरादे का शक्तिशाली होना है। क्योंकि यह भी रेवायत में है कि संकल्प अक़्ल की शक्तियों में से एक है। बुद्धी के पूर्ण होने से इरादे की शक्ति भी ज़्यादा होती है ।

अगर इरादा शक्तिशाली हो तो फिर इंसना आश्चर्यजनक कामों को भी कर सकता है। क्योंकि जब इरादे की शक्ति अपनी चरम सीमा पर होगी तो इंसान किसी भी चीज़ में परिवर्तन कर सकता है। इसी तरह इंसान इरादे की शक्ति में कमी या बड़होतरी कर सकता है । शक्तिशाली इरादे से इंसान ऐसा काम भी कर सकता है जिसके बारे में उसने सोच-विचार भी नहीं किया होगा। जैसा कि हम ने बयान किया कि इरादा बुद्धी की एक शक्ति का भाग है। बुद्धी के पूर्ण होने से इरादा भी पूर्ण हो जाएगा। इस कारण ज़हूर के ज़माने में बुद्धी के पूर्ण होने से इसांनों के इरादे में भी बड़होतरी होगी और इंसान और भी शक्तिशाली हो जाएगा। ज़हूर के ज़माने में इंसानों की

अक़्लें शैतान और नफ़्स की ग़ुलामी से आज़ाद हो जाएँगी। अक़्ल भी शक्तिशाली होगी और उनमें छुपी हुई शक्तियाँ भी उजागर हो जाएँगी।

ग़ैबत के ज़मानें में बहुत से लोगों की इच्छाएँ पूरी नहीं हो पाएँगी, लेकिन ज़हूर के बा बारकत ज़माने में ऐसा नहीं होगा। उस समय जो कोई भी कुछ जानना या पाना चाहेगा तो उसे मिल जाएगा।

हम नें यह सच अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम से सीखा है। हम दिल व जान से उन महान लोगों के फ़रमान को स्वीकार करते हैं ताकि ज़हूर के प्रकाशमय ज़माने को भी हम दिल से स्वीकार कर सकें। इस बात पर हम इमाम-ए-हुसैन अलैहिस्सलाम का एक क़ौल बयान करते हैं :

ان اللہ لیھب لشیعتنا کرامۃ لا یخفی علیھم شیٔ فی الارض وما کان فیھا حتی اَن الرجل منھم یرید ان یعلم علم اھل بیتیہ فیخبر ھم بعلم مایعلمون

ख़ुदा हमारे शीयों को (ज़हूर के ज़माने में दुनिया के सारे लोग अहलेबैत अलैहुमुस्सलाम के आज्ञाकारी होंगे।) ऐसे चमत्कार देगा कि उनसे धरती और उसमें पायी जाने वाली चीज़ों में कुछ भी छुपा नहीं रहेगा। यहाँ तक कि अगर कोई भी अपने परिवार की प्ररिस्थिति को जानना चाहे तो उसी समय उसको अपने परिवार के बारे में ख़बर हो जाएगी।(२4)

अगर ख़ुदा ने चाहा और हम ज़हूर के बा बरकत ज़माने में रहे तो इन तमाम चीज़ों को अपनी आँखों से देखेगे क्योंकि हम ने जो बातें कहीं है वह सब अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम से बयान हुई हैं और हमने भी उन्हीं से सीखा है और हम इन बातों को बिना शंका के स्वीकार

करते हैं। हम यह भी जानते हैं कि उन मासूम और महान हस्तियों के लिए अतीत और भविष्य में कोई फ़र्क नहीं है वो लोग सभी बातों को ऐसे ही जानते है जैसे कि उन्हें अपनी आँखों से देखा हो। हमने इन बातों को अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम से सीखा है और इस को दिल से स्वीकार किया है। और आलमे ज़र से यह अहद व पैमान किया है कि जिस तरह हम आज उनके बाध्य, शैदा व ग़ुलाम और उससे बेपनाह मुहब्बत करने वाले हैं उसी तरह भविष्य में भी रहेंगें। मगर यह बात जानना आवयश्क है कि ग़ैबत के ज़माने में कुछ ऐसे लोग भी हैं कि अगर वह किसी चीज़ को जानना चाहते थे तो अपनी अक़्ल की शक्तियोँ से जान लेते थे। ये वो महान हस्तियाँ है कि जो ग़ैबत के अंधेरे ज़माने में भी प्रकाश तक पहुँच गए। हमने इस बहस में कुछ लोगों के जीवन काल को बयान किया था जैसे कि स्वर्गीय सय्यद बहरुल उलूम रहमतुल्लाह अलैह का जीवनकाल। ताकि सब लोग ज़हूर के ज़माने के लिए तैयार हो जाएँ और उसको स्वीकार कर सकें ।

यह किताबें देखें।

(१)बेहारुल अनवारः ५२/३३६
(२) बेहारुल अनवारः ६७/३५०
(३) बेहारुल अनवारः ५२/३७२
(४) उसूले काफ़ीः १/१७३. बेहारुल अनवारः ७४/२५४
(५) बेहारुल अनवारः ७८/६
(६) बेहारुल अनवारः ७८/६
(७) बेहारुल अनवारः ७८/६
(८) सूरए ज़ोमर, आयत न०. २२
(९) बेहारुल अनवारः ७०/५१
(१०) हालू कोई आम आदमी नहीं बल्कि इमाम-ए-ज़माना अलैहिस्सलाम के नायब थे।
(११) बेहारुल अनवारः ७०/५३
(१२) सूरए बक़रा, आयत न०. ३
(१३) गुलज़ारे अकबरीः ३५८
(१४) तारीख़े कूफ़ाः ७२
(१५) तारीख़े कूफ़ाः ७३
(१६) तारीख़े कूफ़ाः ११२
(१७) हफ़तावार समाचार पत्रः २५ उरदबहिश्त वर्ष १३७६
(१८) उसूले काफ़ीः १/२०

(१९) उस रेवायत में जहल का अर्थ नफ़्स है ना कि अनपढ़ होना।

(२०) तवानहाए ख़ुद रा बे शनासीदः १४

(२१) तवानहाए ख़ुद रा बे शनासीदः ३२

(२२) तवानहाए ख़ुद रा बे शनासीदः १७

(२३) नुसख़ए आत्तारः १३४

(२४) बेहारुल अनवारः ५३/६३

This document was created with Win2PDF available at http://www.daneprairie.com.
The unregistered version of Win2PDF is for evaluation or non-commercial use only.